IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वतंत्र काल मे बिहार के सांस्कृतिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका।

कुमार गौरव

शोध छात्र

विश्वविद्यालय राजनिति विज्ञान विभाग

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

वास्तव में अनुग्रह नारायण सिंह की सांस्कृतिक विकास निरन्तर चलने वाली एक दीर्घकालीन क्रान्ति है। व्यक्ति व समाज दोनों को नई दिशा देना इस सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य है। जहाँ तक सम्भव हो सम्पूर्णता की तरफ बढ़ते जाना है, सम्पूर्णता इस अर्थ में नहीं कि हम विकास की आखिरी मंजिल तक पहुँच रहे है, बल्कि सर्वागीण के मायने में सम्पूर्णता। सांस्कृतिक विकास कभी पूरी नहीं होगी क्योंकि जीवन निरन्तर विकासशील है, इसमें नई–नई समस्ययाएं उत्पन्न होती रहेंगी। अतः क्रान्ति एक अखण्ड धारा है जो सतत् निरन्तर चलेगी तथा हमारे व्यक्तिगत व समाजिक जीवन को बदलती रहेंगी। परिस्थिति के अनूसार इसके रूप बदलेंगें, प्रतिक्रियाएँ बढ़ जायेंगी। यह कन्टीन्यूइंग रिवोल्यूशन है। इस सांस्कृतिक विकास में कोई विराम नहीं है, पूर्ण विराम तो कदापि नहीं।

अनुग्रह नारायण सिंह भारतीय समाज से जुड़ी आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं से अवगत थे। वे लोकतंत्र की दुर्बलताओं से भली–भाँती परिचित थे। वे कहते थे–''हमारा लोकतंत्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है, यह एक ऐसे उल्टे पिरामिड की तरह है, जो सिर के बल खड़ा है........ केवल यह तथ्य कि हर बालिग भारतीय को वोट देने का हक है, शासन पद्धति के पिरामिड को व्यापक आधार नहीं दे देता है। करोड़ों की संख्या में बिखरे हुए व्यक्तिगत मतदाता बालू के कणों के ऐसे ढेर की तरह हैं, जो किसी भी संरचना क बुनियाद नहीं बन सकते हैं। इन कणों को ईटों का रूप देने के लिए मिलाना होगा या कंकरीट जैसे साँचे में ढालना होगा, तभी ये नींव के पत्थर का रूप ग्रहण कर सकेंगे।

सांस्कृतिक विकास—: वास्तव , सामाजिक विकास व सांस्कृतिक विकास एक ही सिक्के दो पहलू हैं भारतीय संस्कृति में एक ओर जहाँ परम्परा, रीति—रिवाज, धर्म व रूढ़िया है वहीं वर्ण, जाति, अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बीमारियाँ भी है जो सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में बाधक सिद्ध हुई हैं। अनुग्रह नारायण सिंह के मतानुसर ''विवाह, जन्म व मृत्यु के साथ जुड़े हुए गलत रीति—रिवाज को दूर करना होगा। समाज की कुरीतियों, कुरिवाजों व कुसंस्कारों के विरूद्ध संघर्ष की आवश्यकता है। .... इससे मुक्कत होने के लिए कदम यही है कि घर—घर में युवक व युवतियाँ इसके विरूद्ध विद्रोह की आवाज बुलन्द करें।''

अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार किसी देश या समाज की संस्कृति ही वह मूलाधार होती है, जिस पर उसक चतुर्दिक विकास निर्भर करता है। अतः संस्कृति के उन मूल जीवन तत्वाकें को संदर्भित करना और समय—समय पर आयी हुई विकृतियों को दूर करना किसी जीवन्त समाज का पहला दायितव होता है। सांस्कृतिक दायित्व के अन्तर्गत कला व साहित्य के लोक तत्वों का संवर्द्धन करना होगा व उसे जनाभिमुख करने की दिशा में लेखकों और कलाकरों की महत्वमपूर्ण भूमिका होगी। रचनाकार व कलाकार ही जीवन मूल्यो के निर्माता होते है, अतः वे ही, सांस्कृतिक विकास के सूत्राधार होंगे।

संदर्भ—सूची :—

.1. अनुग्रह नारायण सिंह : माई टोटल रिवोल्यूशन, एवरी मेंस, दि—22 पृष्ठ 74

2. अनुग्रह नारायण सिंहः राजनैतिक क्रान्ति के लिए आहवान, पृष्ठ—41

3. वी0एन0 सिंहः भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ—316

4. अनुग्रह नारायण सिंह उद्धष्त, अनुग्रह नारायण सिंह पृष्ठ—103

5. पूर्वोक्त पृष्ठ—585

6. लोक दृष्टि में जय प्रकाश, में उद्धष्त , पृष्ठ—85

7. अनुग्रह नारायण सिंह हमारी नजरों मे'' द रेडिकल ह्यूमेनिस्ट, मार्च, 1978, पृष्ठ—10

8. अनुग्रह नारायण सिंह, लोक—स्वराज्य, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) जुलाई, 1999, पृष्ठ—10

9. अनुग्रह नारायण सिंह, राजनैतिक क्रान्ति, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) सितम्बर, 1999

10. पूर्वोक्त, पृष्ठ—27